हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17–HL-**HL8**

निर्धारित समय: तीन घंटे ***Time allowed: Three Hours***	*अधिकतम अंक: 250* ***Maximum Marks: 250***

नाम (Name): Arvind Pratap Singh

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date):

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

0	5	0	6	0	7	3

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): अरविंद

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **Five** questions.*

*Candidate has to attempt all **FIVE** questions.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 142½

टिप्पणी (Remarks): प्रयास अच्छा है। कुछ व्याख्याओं को थोड़ा और बेहतर बनाने का प्रयास करें।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) सतगुरु की महिमा अनँत, अनँत किया उपगार।
लोचन अनँत उघारिया, अनँत दिखावनहार।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भक्तिकाल में 'गुरु-माहात्म्य वर्णन' का केंद्रीय महत्त्व है। गुरु एक ओर तो ईश्वर का साक्षात्कार कराता है और दूसरी ओर व्यावहारिक धरातल पर सांसारिक माया-मोह के समक्ष ज्ञान का निदर्शन भी। प्रस्तुत साखी डॉ. श्यामसुंदर दास द्वारा संपादित 'कबीर ग्रंथावली' के "सतगुरु को अंग" शीर्षक से उद्धृत है।

कबीरदास भी गुरु के महत्त्व को स्वीकार करते हुए कहते हैं कि सतगुरु की महिमा का कोई अंत नहीं है। उनका मुझ पर अनंत उपकार है। संसार की नित्य-प्रति की गति में फँसकर जो मैं भटक रहा था, सतगुरु ने मुझे ज्ञानमार्ग दिखाकर मेरे नेत्र खोल दिए हैं। अब इस ज्ञानप्राप्ति के बाद यथार्थ और भ्रम

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

का भेद पूर्णतया स्पष्ट है। ज्ञान का सच्चा मार्ग जो ईश्वरप्राप्ति की ओर ले जाता है, वह दिखाकर सतगुरु ने मुझ पर अनंत उपकार किया है।

<u>काव्य-सौंदर्य</u>

<u>भाषा</u> - सधुक्कड़ी (<u>कई संस्करणों</u> में इस साखी पर पंजाबी प्रभाव है - उघाड़िया, दिखावणहार

रस - शांत रस (निर्वेद)

छन्द - दोहा (साखी)

अलंकार - अनुप्रास, यमक (अनंत) [अनंत / जो बंद न थे

<u>विशेष</u>- सतगुरु का महत्त्व कबीर-साहित्य में सर्वथा व्याप्त है।

<u>यथा</u>- ① सतगुरु की महिमा अनंत बाती दई पघार

② गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागो पायँ।
बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियो बताय॥

6/10

——x——

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) काहे को रोकत मारग सूधो?
सुनहु मधुप! निर्गुन-कंटक तें राजपंथ क्यो रुँधो?
कै तुम सिखै पठाए कुब्जा, कै कही स्यामघन जू धौं।
बेद पुरान स्मृति सब ढूँढ़ौ, जुवतिन जोग कहूं धौं?
ताको कहा परेखो कीजै जानत छाछ न दूधो।
सूर मूर अक्रूर गए लै ब्याज निबेरत उधो।।

सूरदास कृत 'भ्रमरगीतसार' में उद्धव और गोपियों के संवाद के माध्यम से निर्गुण-सगुण, ग्राम-शहर के साथ-साथ ज्ञान और प्रेम का द्वन्द्व भी प्रदर्शित किया गया है। प्रस्तुत पद में भी गोपियाँ उद्धव को अपने सरल-सहज तर्कों से स्नेह-प्रेम का महत्त्व बता रही हैं।

कृष्ण के मथुरा-गमन के बाद गोपियों के पास कृष्ण-स्मृति की ही पूंजी बची है। अब उद्धव उसे ही छीनना चाहते हैं। गोपियाँ कहती हैं कि हम जिस प्रेम-मार्ग पर जा रहे हैं, हे उद्धव! तुम उस पर निर्गुण के काँटे बिछाकर क्यों हमारा रास्ता रोकते हो। तुम सचमुच कृष्ण ने भेजा है या ईर्ष्यावश कुब्जा से पाठ पढ़ाकर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तुम्हें भेजा है। तुम वेद-पुराण में ही देख लो, स्त्रियों के लिए प्रवृत्ति मार्ग का ही उल्लेख है, योग-त्याग-वैराग्य का संदेश नहीं है।

हम प्रेममार्ग के मार्गी हैं - उसका महत्त्व जानते हैं। जो इध और छाछ का अंतर न जाने उसकी क्या परीक्षा लें? उद्धव हमारे पास जो कृष्ण थे उन्हें अक्रूर ले गए, अब तुम स्मृति को भी ले जाना चाहते हो।

काव्य-सौंदर्य - भाषा - सरस ब्रजभाषा
रस - वियोग श्रृंगार
छन्द - गेयपद
अलंकार - अलंकार अनुप्रास | उपमा |

विशेष ① ~~छाछ~~ - इध और मूल - ब्याज के प्रसंग में मुहावरों और लोकजीवन का प्रभाव है।

② मूल और ब्याज का प्रसंग तत्कालीन 16वीं सदी के समाज का चित्र प्रदर्शित करता है।

———x———

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन में करत हैं, नैननु ही सों बात।।

बिहारी की कविता में समाहार-शक्ति का विशेष महत्व है। प्रस्तुत दोहे में इसी का निदर्शन किया गया है। यह दोहा जगन्नाथदास रत्नाकर द्वारा संपादित "बिहारी रत्नाकर" से उद्धृत है।

नायक-नायिका की चेष्टाओं को रीतिकाल में साहित्य का मुख्य विषय माना गया है इससे इहलौकिकता और शृंगारिकता का प्रादुर्भाव हुआ। यहाँ रीतिसिद्ध कवि बिहारी कहते हैं कि एक ऐसे भवन में नायक-नायिका हैं जो लोगों की भीड़ से भरा है। इसलिए वे नैनों के संकेतों के माध्यम से ही बात करते हैं।

नायक नायिका से आँखों से अनुरोध करता है, वह बनावटी रूठ जाती है। नायिका न मानने का रूप दिखाती है। उसके कहने पर नायक रीझता है तो नायिका और भी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। Please do not write anything except the question number in this space)

खीझ जाती है। प्रिय - और प्रेमिका की निगाहें फिर मिलती हैं और नायिका प्रसन्नचित्त हो जाती है। नायक द्वारा अपने कहने के बनावटीपन को पकड़े जाने से नायिका लजाने लगती है।

सम्पूर्ण कार्यव्यापार को एक ही श्रृंखला में रखकर काव्यरस की सृष्टि की गई है।

काव्य-सौंदर्य - भाषा - ब्रजभाषा
रस - श्रृंगार
छन्द - दोहा
अलंकार - अनुप्रास

विशेष -

① बिहारी की समाहार क्षमता का निदर्शन किया है।

② नैनों के संचालन और भावों के व्यापार की श्रृंखला सूक्ष्म अवलोकन शक्ति का परिचायक है।

—x—

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) भू-लोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला-स्थल कहाँ?
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल जहाँ।
सम्पूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है?
उसका कि जो ऋषिभूमि है, वह कौन? भारतवर्ष है।।

20वीं सदी के प्रथम दशक में भारत नवजागरण-कालीन चेतना से संपन्न होकर राष्ट्रीय मुक्ति की ओर बढ़ रहा था। मैथिलीशरण गुप्त कृत भारत-भारती इस तथ्य का ऐतिहासिक दस्तावेज है। भारत-भारती ने इस प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका भी निभाई है।

यद्यपि की 'भारत-भारती' में भारत के महत्त्व के साथ-साथ ऐतिहासिक समस्याओं और भविष्य के मार्ग का भी निरूपित है। परन्तु यहाँ गुप्त जी भारत के भौगोलिक और सांस्कृतिक महत्त्व का प्रतिपादन कर रहे हैं।

गुप्त जी कहते हैं कि विराट हिमालय और गंगा नदी वाला हमारा यह देश इस संसार का गौरव और प्रकृति की पुण्य-लीलाभूमि है। यह देश ऋषिभूमि रहा है और संसार

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

के सभी देशों से अधिक इसका उत्कर्ष रहा है। भारत विश्वगुरु के पद पर भी आसीन रहा है।

काव्य सौंदर्य भाषा - खड़ीबोली
रस - वीर (उत्साह का समावेश)
छन्द - तुकांत
अलंकार - अनुप्रास

विशेष - 1. भारत-भारती खड़ीबोली हिंदी का पहला लोकप्रिय ग्रंथ है।

(2) अतीत का गौरव, भौगोलिक अभिव्यक्ति और मातृभूमि के प्रति प्रेम जैसी विशेषताएं नवजागरण और प्रारंभिक राष्ट्रवाद का प्रभाव हैं।

(3) प्रसाद साहित्य में भी 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' और 'हिमाद्रि तुंग शृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती' जैसी कविताओं में यह प्रभाव परिलक्षित है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) है अमानिशा, उगलता गगन घन अंधकार
खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन चार,
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल
भू-धर ज्यों ध्यान-मग्न, केवल जलती मशाल।

राम - रावण समर को महाप्राण निराला ने सत्य - असत्य के संघर्ष के रूप में चित्रित किया है। प्रस्तुत पंक्तियां "राम की शक्तिपूजा" के इस प्रसंग से ली गई हैं जहाँ शक्ति को रावण के पक्ष में देखकर राम स्वयं शक्ति की मौलिक कल्पना हेतु शक्ति की आराधना की ओर प्रवृत्त होते हैं।

उस विकट परिस्थिति और संशय के बाद का दृश्य है कि प्रकृति में भी निराला उसी संशय और हताशा के प्रभाव को दिखा रहे हैं। अंधकार का प्रभाव प्रभावमयता और भी सघन कर रही है। पवन भी स्तब्ध है और चारों ओर नीरव शांति छाई है।

समुद्र का शोर ही अनवरत रूप से

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

चल रहा है पर्वत भी इतना स्थिर प्रतीत हो रहा है जैसे ध्यानमग्न हो। अंत में निराला एक आशावादी संकेत करते हैं कि केवल मराल बनकर इस अंधकार में भी प्रकाश की आशा बनी है।

<u>काव्य-सौंदर्य</u> - भाषा - खड़ीबोली
रस - शांत
अलंकार - अनुप्रास, <u>मानवीकरण</u>, <u>उत्प्रेक्षा</u>

<u>विशेष</u> - ① संशय की अभिव्यक्ति में भी संकल्प की मराल जल रही है।

② गगन का मानवीकरण किया गया है।

③ राम रावण के समर को सत्य-असत्य का निरंतर चलने वाला प्रतीक माना गया है। अंधकार असत्य का परिचायक है।

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) पीछै लागा जाइ था, लोक वेद के साथि,
आगे तैं सतगुर मिल्या, दीपक दीया हाथि।।

कबीरदास के साहित्य में गुरु का महत्त्व इस संसार के भ्रम के समक्ष ज्ञान का प्रतिपादन करने से है। प्रस्तुत साखी डा. श्यामसुंदर दास कृत "कबीर ग्रंथावली" के "सतगुरु को अंग" शीर्षक से ली गई है।

कबीरदास का मंतव्य है कि सांसारिक चक्र में फंसे जीव की तरह मैं लोकवेद का पालन करता जा रहा था। यहां लोक व्यावहारिक जगत और वेद आध्यात्मिक मार्ग का प्रतीक है।

पर जब मुझे सतगुरु की प्राप्ति हुई तो उन्होंने मुझे ज्ञान रूपी दीपक प्रदान किया है। इस दीपक के प्रकाश में मेरा अज्ञान रूपी अंधकार मिट गया और मैं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सांसारिक माया-मोह से मुक्त हो गया। अब ज्ञानमार्ग के माध्यम से निर्गुण ईश्वर के पथ पर अग्रसर हूँ।

काव्य-सौंदर्य - भाषा - सधुक्कड़ी (मिल्या जैसे प्रभाव)
रस - शांत
छन्द - दोहा (साखी)
अलंकार - अनुप्रास, रूपक (ज्ञान रूपी दीपक)

विशेष - (1) कबीरदास की नहीं सम्पूर्ण भक्ति-साहित्य में गुरु महात्म्य का केंद्रीय महत्त्व है।

(2) अन्यत्र कबीर कहते हैं कि -
सतगुरु की महिमा अनँत, अनँत किया उपगार।
अथवा
बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियो मिलाय॥

6/10

—— x ——

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) चढ़ा असाढ़ गँगन घन गाजा। साजा बिरह दुंद दल बाजा।
धूम स्याम धौरे घन धाए। सेत धुजा बगु पाँति देखाए।
खरग बीज चमकै चहुँ ओरा। बुंद बान बरिसै घन घोरा।
अद्रा लाग बीज भुइँ लेई। मोहि पिय बिनु को आदर देई।

जायसी कृत "पद्मावत" अवधी का खालिस बेमेल मिजाज के साथ-साथ प्रेम के औदात्य का भी अभूतपूर्व काव्य है। "नागमती का विरह-वर्णन" इसका सबसे उज्ज्वल अंश है।

भारतीय काव्य परम्परा में मनोदशा के साथ-साथ प्रकृति का सामंजस्य दिखाना कवि-परम्परा रही है। बारहमासा वर्णन का प्रारंभ करते हुए जायसी कहते हैं रत्नसेन के वियोग में नागमती का विरहकातर मन उद्वेलित है। आषाढ़ के महीने में बादलों की घनघोर आवाज, काले-सफेद बादलों का आना, बगुलों की पंक्ति की सफेद ध्वजा, बिजली का चमकना और बूंदों का गिरना सभी नागमती के विरह को बढ़ाने वाले सिद्ध हो रहे हैं। ऐसा लग रहा है कि विरह

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

की दुंदुभी बज रही है और बिजली और बूँदें, तलवार और बाण बनकर मुझे काट रही हैं।

आर्द्रा नक्षत्र में जमीन में बीज बोने का समय है। जिस स्त्री का पति परदेस में है, उसे कौन सम्मान देगा?

काव्य-सौंदर्य - भाषा - अवधी
रस - विप्रलंभ श्रृंगार
छन्द - चौपाई (16-16 मात्राएँ)
अलंकार - अनुप्रास, उपमा

विशेष - ① बारहमासा वर्णन में आषाढ़ से प्रारम्भ करने की परम्परा रही है।

② गर्मी में भी नायिका का विरह प्रधान है -
जेठ जरै जग बहै लुवारा।
उठै बवंडर धिकै पहारा॥

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) जिसे तुम समझे हो अभिशाप, जगत की ज्वालाओं का मूल-
ईश का वह रहस्य वरदान, कभी मत इसको जाओ भूल।
विषमता की पीड़ा से व्यस्त हो रहा स्पंदित विश्व महान,
यही दुख-सुख, विकास का सत्य यही भूमा का मधुमय दान।

जयशंकर प्रसाद कृत 'कामायनी' में मनु- श्रद्धा- इड़ा- के साथ-साथ सभ्यता के संकट और सभ्यता के विकास की भी गाथा है। प्रस्तुत काव्यांश कामायनी की श्रद्धा-सर्ग से उद्धृत है जहाँ श्रद्धा विषादग्रस्त मनु में आशा और उत्साह का संचार करती है।

देव-सभ्यता के विध्वंस और प्रलय के पश्चात मनु विषादग्रस्त हो गए हैं और वे उत्साहरहित होकर निरुद्देश्य भटक रहे हैं। श्रद्धा मनु से कहती है कि परिवर्तन का यह क्रम तो चलता रहता है इस परिवर्तन में दुखी होने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि प्रलय में ही सृष्टि की संभावना छिपी है।

अपने चारों ओर के विश्व को देखो। यह

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this)
कृपया इस स्थान में संख्या के अतिरिक्त न लिखें। (Please do not write anything except question number in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विषमता की पीड़ा से व्यस्त है प्रकृति अर्थात अधिदैविक सत्ता के अनुसार ही यह सुख-दुख, समता-विषमता और प्रलय-सृष्टि का चक्र चलता रहता है। तुम अपनी भूमिका को सृष्टि में प्रवृत्त कर इसका निर्वहन करो।

काव्य-सौंदर्य भाषा - खड़ीबोली
रस - शांत (पर उत्साह की भी उपस्थिति)
छन्द - तुकांत
अलंकार - अनुप्रास, विरोधाभास

विशेष - ① सृष्टिचक्र की प्रसाद ने प्रत्यभिज्ञा दर्शन के अनुसार व्याख्या की है।

② मनु पर इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ता है
" मैं हूँ यह वरदान सदृश क्यों
लगा गूँजने कानों में।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) हरि हैं राजनीति पढ़ि आए।
समुझी बात कहत मधुकर जो? समाचार कछु पाए?
इक अति चतुर हुते पहिले ही, अरु करि नेह दिखाए।
जानी बुद्धि बड़ी, जुवतिन को जोग-सँदेस पठाए।।
भले लोग आगे के, सखि री ! परहित डोलत धाए।
वे अपने मन फेरि पाइए जे हैं चलत चुराए।।
ते क्यों नीति करत आपुन जे औरनि रीति छुड़ाए?
राजधर्म सब भए सूर जहँ प्रजा न जायँ सताए।।

सूरदास के 'भ्रमरगीतसार' में गोपियाँ अपने सरल-सहज तर्कों से ऊद्धव के ज्ञान मार्ग और निर्गुण माहात्म्य का प्रतिपादन करती हैं। प्रस्तुत पद रामचंद्र शुक्ल द्वारा संपादित 'भ्रमरगीतसार' से उद्धृत है।

कृष्ण के संदेश पर भी व्यंग्य करते हुए गोपियाँ कहती हैं कि सच्चा राजधर्म तो वह है जहाँ प्रजा को कोई सताए ना पर वहाँ तो राजनीति के प्रभाव से कृष्ण हर बात विपरीत ही कर रहे हैं। अगर वे इतने ही चतुर थे तो स्नेह दिखाया ही क्यों?

भारतीय परम्परा में स्त्रियों को प्रवृत्ति मार्ग सिखाया जाता है और ऊद्धव योग का संदेश

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भाव है, पहले के लोग तो परहित के लिए कितना त्याग करते थे, पर अब तो स्वार्थ का ही साम्राज्य है। जब वे दूसरों को उनके मार्ग से हटाना चाहते हैं तो स्वयं पर उसे क्यों नहीं आजमाते।

काव्य सौंदर्य - भाषा - ब्रजभाषा
रस - वियोग श्रृंगार
छन्द - गेयपद
अलंकार - अनुप्रास.

विशेष - ① प्रेम के समक्ष प्रेमी के तर्कों का भी खण्डन द्रष्टव्य है।

② राजधर्म और राजनीति में पहले को सकारात्मक अर्थ में लिया गया है और दूसरे को नकारात्मक।

—— x ——

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) शत घूर्णावर्त, तरंग- भंग उठते पहाड़,
जल राशि-राशि जल पर चढ़ता खाता पछाड़,
तोड़ता बन्ध-प्रतिसंध धरा, हो स्फीत-वक्ष
दिग्विजय-अर्थ प्रतिपल समर्थ बढ़ता समक्ष।

निराला कृत "राम की शक्तिपूजा" में राम और रावण का संघर्ष सत-असत, न्याय और अन्याय के संघर्ष का प्रतीक है। प्रस्तुत काव्यांश में प्रसंग यह है कि राम की उद्विग्न मनःस्थिति को देखकर हनुमान उद्वेलित हो जाते हैं।

'राम की शक्तिपूजा' में हनुमान मात्र राम के सेवक ही नहीं हैं बल्कि वे एक महान योगी और रूद्रांश भी हैं। राम के आँसुओं से सूक्ष्म रूप में हनुमान एक-एक कोष चढ़ते चले जाते हैं और इसी घटना को प्राकृतिक बिम्ब के माध्यम से निराला ने प्रस्तुत किया है।

हनुमान के उद्वेलन का प्रभाव ऐसा है मानो लहरें, जलराशि और आवर्तों में पानी

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

हलचल हो और वे एक के ऊपर एक चढ़ते चले आते हैं। सभी बंधों को तोड़ता हुआ हनुमान का रूप मानो दिग्विजय के लिए निकल पड़ा है।

काव्य - सौंदर्य - भाषा - खड़ीबोली
रस - वीररस
छन्द - तुकांत
अलंकार - अनुप्रास.

विशेष - ① हनुमान-भक्त निराला ने योगी और रुद्रांश रूप का समावेश किया है।

② शिव और पार्वती अपने विवेक से हनुमान के इस रौद्र रूप को शांत करते हैं।

——x——

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, बेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright - Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) नैना नीझर लाइया, रहट बहै निस जाम।
पपीहा ज्यूँ पिव पिव करौं, कब रु मिलहुगे राम।।

श्यामसुंदर दास द्वारा संपादित 'कबीर ग्रंथावली' के "विरह को अंग" शीर्षक से प्रस्तुत साखी उद्धृत है।

कबीर कहते हैं कि राम की प्राप्ति में पड़कर अब मैं उनके विरह में संतप्त हूँ। नैनों से आँसू झरते नहीं, दिन-रात रहट चलता रहता है और मेरा मन पपीहे की तरह प्रिय का अहर्निश स्मरण करता रहता है। ऐसे में हे प्रिय राम! हमारा मिलन कब होगा।

काव्य सौंदर्य भाषा - सधुक्कड़ी
रस - शांत
छंद - दोहा, साखी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अलंकार - अनुप्रास, उत्प्रेक्षा (पदिया) नहीं

विशेष - ① ईश्वर के विरह में सांसारिक प्रेम के प्रतिमानों का जिक्र किया है।

② कबीर कहते हैं

अंखड़िया झाईं पड़ी पंथ निहारि निहारि
जीभड़ियां छाला पड़ा राम पुकारि पुकारि।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) न्यायोचित सुख सुलभ नहीं
जब तक मानव-मानव को,
चैन कहाँ धरती पर, तब तक
शान्ति कहाँ इस भव को?
"जब तक मनुज-मनुज का यह
सुख-भाग नहीं सम होगा,
शमित न होगा कोलाहल,
संघर्ष नहीं कम होगा।

रामधारी सिंह दिनकर कृत '<u>कुरुक्षेत्र</u>' में युद्धविरोधी और मानववादी दृष्टि की स्थापना की गई है।

युद्ध और संघर्ष के मूलभूत कारणों की ओर संकेत करते हुए कवि ने कहा है कि जब तक मनुष्यों के मध्य समानता और न्याय के आधार पर संसाधनों और सुखों का वितरण नहीं होगा, तब तक इस संघर्ष और कोलाहल को नहीं रोका जा सकता।

भाषा - खड़ीबोली
छन्द - तुकांत

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष - वर्तमान में भी लोकतंत्र, सामाजिक न्याय और वितरणमूलक न्याय के मूल में भी यही विचार है।

—— x ——

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ग) बिलग जनि मानहु, ऊधो प्यारे!
वह मथुरा काजर की कोठरि जे आवहिं ते कारे।।
तुम कारे, सुफलकसुत कारे, कारे मधुप भँवारे।
तिनके संग अधिक छबि उपजत, कमलनैन मनिआरे।।
मानहु नील माट तें काढ़े लै जमुना ज्यों पखारे।
ता गुन स्याम भई कालिंदी सूर स्याम गुन न्यारे।।

'भ्रमरगीतसार' में सूरदास ने गोपियों की वाग्विदग्धता की अद्भुत छवि प्रस्तुत की है।

गोपियाँ उद्धव पर व्यंग्य करते हुए कहती हैं कि क्या मथुरा काजल की कोठरी है जो कृष्ण, अक्रूर और तुम सभी लोग काले हो। ऐसा लगता है जैसे ~~यमुना~~ नीली मिट्टी से इन साँचों का निर्माण कर इन्हें यमुना-जल से पखार दिया गया है।

और इन सभी के गुण वास्तव में अवगुण थे क्योंकि उनके कालेपन के प्रभाव से यमुना का जल काला हो

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गया है।

भाषा - ब्रजभाषा

रस - शांत, हास्य का भी समावेश।

छन्द - गेयपद

अलंकार - अनुप्रास।

विशेष - गोपियों के सहज तर्क और वाग्विदग्धता प्रदत्त है।

—— X ——

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) जौ रोऊं तौ बल घटै, हँसौं तौ राम रिसाइ।
मनंही माँहि बिसूरणां, ज्यूँ घुँण काठहि खाइ।।

कबीरदास कृत साखियों के संग्रह 'कबीर-ग्रंथावली' (सं॰ श्यामसुंदर दास) के "विरह कौ अंग" शीर्षक से उद्धृत है।

राम के विरह में अर्थात परमात्मा के विरह में जीवात्मा की स्थिति का जिक्र करते हुए कबीर कहते हैं कि यह विरह मन ही मन सहना है जैसे घुन लकड़ी को खाता है। हंसने पर राम रिसा सकते हैं और रोने से बल घटेगा, जिससे मिलन की आशा और कम होती जाएगी।

भाषा - सधुक्कड़ी
रस - वियोग श्रृंगार
छन्द - साखी, दोहा
अलंकार - अनुप्रास, उत्प्रेक्षा (ज्यूं घुण...

5/10

Copyright - Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) श्रेय नहीं कुछ मेरा,
मैं तो डूब गया था स्वयं शून्य में-
वीणा के माध्यम से अपने को मैंने,
सब-कुछ को सौंप दिया था-
सुना आप ने जो वह मेरा नहीं,
न वीणा का था:
वह तो सब-कुछ की तथता थी
महाशून्य
वह महामौन
अविभाज्य, अनाप्त, अद्रवित, अप्रमेय
जो शब्दहीन
सब में गाता है।

'असाध्य वीणा' को अज्ञेय के सृजन-कर्म और सृजन-प्रक्रिया सम्बंधी विचारों के लिहाज से भी महत्वपूर्ण कविता माना जाता है।

प्रियंवद ने स्वयं को परम्परा में आत्मसात कर दिया है। ऐसे में वह उत्पन्न संगीत के लिए स्वयं को माध्यम मात्र मान रहा है।

प्रियंवद का कहना है कि मैंने तो

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

स्वयं को उस सम्पूर्ण के हाथों सौंप दिया था और वह परम्परा या सम्पूर्ण की तथता ने ही मेरे और वीणा के माध्यम से संगीत के रूप में आकार लिया है।

भाषा - तत्सम खड़ीबोली

रस - शांत

छन्द - अतुकांत छन्द

अलंकार - अनुप्रास

- विशेष - ईश्वर, परम्परा को नेति-नेति के रूप में व्यक्त करने की प्रवृत्ति का प्रभाव।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) विपन्नता के इस अथाह सागर में सोहाग ही वह तृण था, जिसे पकड़े हुए वह सागर को पार कर रही थी। इन असंगत शब्दों ने यथार्थ के निकट होने पर भी, मानों झटका देकर उसके हाथ से वह तिनके का सहारा छीन लेना चाहा, बल्कि यथार्थ के निकट होने के कारण ही उनमें इतनी वेदना-शक्ति आ गई थी। काना कहने से काने को जो दुःख होता है, वह क्या दो आँखों वाले आदमी को हो सकता है?

प्रेमचंद कृत 'गोदान' में औपनिवेशिक अर्थतंत्र की मीमांसा के साथ-साथ गृहस्थ प्रेम की एक प्रांतधारा भी साथ बहती चलती है। होरी के प्रांत के चिह्न स्पष्ट होने पर धनिया की मनःस्थिति का इस गद्यांश में वर्णन है।

होरी और धनिया के गार्हस्थिक जीवन में कई उतार-चढ़ाव आते हैं परंतु एक सामान्य भारतीय गृहस्थ परिवार की भाँति वे एक-दूसरे के सहारे सभी दुखों को पार कर जाते हैं। अब जब होरी का प्रांत धनिया को आभास दे रहा है कि वह संबल भी उसके साथ से छूटने वाला है। ऐसी परिस्थिति में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

धनिया की वेदना भी तीव्र हो गई है और वह अधिक सुभेद्य भी हो गई है।

साहित्यिक सौंदर्य

भाषा - सरल सहज हिन्दुस्तानी

शैली - भावपूर्ण मार्मिक शैली

विशेष - (1) भारतीय समाज में गार्हिक प्रेम के महत्त्व और अकेली स्त्री की सुभेद्य स्थिति की ओर संकेत किया गया है।

—— x ——

5/10

और बेहतर करें

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मगर कोठरी में बैठने की देर थी कि आँखों से छल-छल आँसू बहने लगे। वह दुपट्टे से बार-बार उन्हें पोंछती, पर वे बार-बार उमड़ आते, जैसे बरसों का बाँध तोड़कर उमड़ आये हों। माँ ने बहुतेरा दिल को समझाया, हाथ जोड़े, भगवान का नाम लिया, बेटे के चिरायु होने की प्रार्थना की, बार-बार आँखें बन्द की, मगर आँसू बरसात के पानी की तरह जैसे थमने में ही न आते थे।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भीष्म साहनी की कहानी "चीफ की दावत" वस्तुतः प्रेमचंद की परम्परा की विस्तार है। प्रस्तुत प्रसंग में बेटे द्वारा उपेक्षित होने पर माँ की मनःस्थिति और मार्मिक भावनाओं का जिक्र किया गया है।

बेटे द्वारा माँ को एक उपेक्षित वस्तु की तरह दिखाने का प्रयास किया जाता है और अंत में वही माँ अधिकारी को प्रभावित करने में बेटे के काम भी आती है। चीफ के चले जाने पर जब माँ अपने अपनी कोठरी में बैठती है तो उपेक्षा का दंश सह नहीं कर पाती। बेटे का बुरा न मन में आने पाए, इसकी लाख कोशिशों के बावजूद भी उसके आँसू नहीं रुक पाते और

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

अनवरत बढ़ने लगते हैं।

साहित्यिक सौंदर्य - भाषा - साहित्यिक प्रवाहमयी खड़ीबोली
शैली - भावपूर्ण, मार्मिक

विशेष - ① 'चीफ की दावत' कहानी की तुलना प्रेमचंद की 'बूढ़ी काकी' से की जा सकती है।

② आज के भारतीय समाज में संयुक्त परिवारों के विघटन और सामाजिक सुरक्षा के अभाव के प्रभाव चलते वृद्धों की स्थिति और भी दुर्भेद्य हो गई है।

———x———

5/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) भविष्य की चिन्ता हमें कायर बना देती है, भूत का भार हमारी कमर तोड़ देता है। हममें जीवन की शक्ति इतनी कम है कि भूत और भविष्य में फैला देने से वह और भी क्षीण हो जाती है। हम व्यर्थ का भार अपने ऊपर लादकर रूढ़ियों और विश्वासों और इतिहासों के मलबे के नीचे दबे पड़े हैं, उठने का नाम ही नहीं लेते, वह सामर्थ्य ही नहीं रही। जो शक्ति, जो स्फूर्ति, मानव-धर्म को पूरा करने में लगनी चाहिये थी, सहयोग में, भाई-चारे में, वह पुरानी अदावतों का बदला लेने और बाप-दादों का ऋण चुकाने की भेंट हो जाती है और यह जो ईश्वर और मोक्ष का चक्कर है, इस पर तो मुझे हंसी आती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गोदान में प्रेमचंद ने शहरी पात्रों के माध्यम से कई वैचारिक बहसों को पाठकों के समक्ष रखा है। पहले मेहता के माध्यम से वे वर्तमान और सांसारिक विषमता को दूर करने के प्रयत्नों को वरीयता देने की बात करते हैं।

वस्तुतः मूल बात यही है कि एक तरफ अतीत हमें रूढ़ियों और परम्पराओं की बेड़ियों में जकड़ने का प्रयास करता है और भविष्य की चिंता भी हमें सुरक्षा की ओर खींचती है। वर्तमान जीवन की विषमतामूलक समस्याओं को दूर करने के लिए जिस साहस और ऐक्य भाव की हमें आवश्यकता होती है वह

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

इस प्रक्रिया में बिखर जाता है। ईश्वर और मोक्ष जैसी निजी और अलौकिक प्राथमिकताओं ने भी इस मार्ग में बाधा उत्पन्न की है।

भाषा - सरल हिंदुस्तानी

शैली - प्रवाहमयी, भाषण-शैली

विशेष - ① प्रगतिशील इहलौकिक दर्शन का प्रतिपादन किया गया है।

② अतीत और भविष्य को दबाव की तरह नहीं अपितु प्रेरणा की तरह ग्रहण कर ही हम सृजनात्मक भूमिका का निर्वहन कर सकते हैं।

—— x ——

5½/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) धनिया यन्त्र की भांति उठी, आज जो सुतली बेची थी, उसके बीस आने पैसे लायी और पति के ठण्डे हाथ में रखकर सामने खड़े दातादीन से बोली-महराज! घर में न गाय है, न बछिया, न पैसा। यही पैसे हैं, यही इनका गोदान है।

प्रेमचंद कृत गोदान के इस अंश में नायक होरी की मृत्यु व पण्डित द्वारा गोदान कराए जाने की माँग धनिया की मनःस्थिति का वर्णन किया गया है।

गृहस्थ-प्रेम में एक-दूसरे के संबल से ही होरी और धनिया ने जीवन के सभी उतार-चढ़ावों का सामना किया था। एक भारतीय नारी, विशेषकर पारंपरिक ग्रामीण समाज में, के लिए पति की मृत्यु के साथ ही उसके जीवन के अधिकांश सुखों का अंत मान लिया जाता है।

1936 ई० के भारत में तो यह तथ्य बिल्कुल ही सत्य था। ऐसे में धनिया में दिनभर की कमाई के बीस पैसे को ही गोदान के रूप में विश होकर प्रस्तुत कर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दिया। इस अंश में मृत्यु के बाद भी धार्मिक जकड़बंदी का रूप दिखाया है जो होरी जीते जी एक गाय न पाल सका उससे मरने के बाद गोदान की आशा की जा रही है।

भाषा - सहज हिन्दुस्तानी

शैली - भावपूर्ण, मार्मिक

विशेष - ① माईस्थ्य जीवन के मार्मिक चित्र का अंकन किया गया है।

② धार्मिक जकड़बंदी को भी नग्न रूप में प्रदर्शित किया गया है।

—x—

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) जीना चाहते हो? कठोर पाषाण को भेदकर, पाताल की छाती चीरकर अपना भोग्य संग्रह करो; वायुमंडल को चूसकर, झंझा-तूफान को रगड़कर, अपना प्राप्य वसूल लो; आकाश को चूमकर, अवकाश की लहरों में झूमकर, उल्लास खींच लो।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपने निबंध "कुटज" में सांस्कृतिक अन्वेषण के साथ-साथ मानवीय जिजीविषा के सूत्रों को भी रेखांकित किया है।

कुटज स्वयं पाषाण के मध्य उगता है। कुटज के माध्यम से आचार्य ने मानवीय जिजीविषा के लिए प्रेरणा प्रस्तुत किया है कि जीवन-संघर्ष में अगर जीना चाहते हो तो संघर्ष में घबराओ मत। कठोर से कठोर प्रकृति के मध्य भी कुटज अपना जीवन रस खींचकर उल्लासित खड़ा है।

पाषाण, पर्वत, आकाश जहाँ से भी संभव हो अपने जीवन-रस का संग्रह करो। मनुष्य को भी समस्याओं और बाधाओं से घबराकर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

पीछे हटने की बजाय उनका सामना करना चाहिए और संघर्ष के माध्यम से विजय-पथ की ओर अग्रसर होना चाहिए यही दृष्टांत प्रस्तुत किया गया है।

भाषा - तत्सम, प्रवाहपूर्ण

शैली - ओजपूर्ण

विशेष - ① कुटज के माध्यम से सांस्कृतिक-यात्रा भी इस निबंध में प्रस्तुत की गई है।

② आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के सम्पूर्ण साहित्य में ही 'मानव' और उसकी 'जययात्रा' को केंद्र में रखा गया है।

———x———

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) तो क्या ये मेरे मोटे होने के दिन हैं? मोटे वह होते हैं जिन्हें न रिन का सोच होता है न इज्जत का। इस जमाने में मोटा होना बेहयाई है। सौ को दुबला करके तब एक मोटा होता है। ऐसे मोटेपन में क्या सुख? सुख तो जब है कि सभी मोटे हों।

प्रस्तुत प्रसंग प्रेमचंद की कहानी 'पूस की रात' से उद्धृत है। जहाँ ऋणचक्र और गरीब की दुर्दशा का वर्णन किया गया है। हल्कू की कमाई के सारे पैसे तो ऋण चुकाने में ही चले जाते हैं। पत्नी द्वारा उलाहना देने पर वह कहता है कि मोटा होना तो इस समाज में एक प्रकार की बेहयाई है। ऋण के नीचे पिसने वाले और सामाजिक मर्यादा का ध्यान रखने वाले लोग कभी भी मोटे नहीं हो सकते।

मोटा होना तभी सुखद होगा अर्थात समृद्धि तभी सुखद होगी जब एक के पास न होकर समाज में सभी के मध्य इसका बराबर बँटवारा हो।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भाषा - हिन्दुस्तानी

शैली - संवाद शैली

विशेष - ① समाजवादी विचारों का स्पष्ट प्रभाव दिखता है।

② सामाजिक विषमता का चित्रण किया गया है।

5/10

———— x ————

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) नारी के प्रति अनुराग से, उसके आश्रय की कामना से ही पुरुष उसे अधीन रख कर उसे आत्म-निर्भर नहीं रहने देता। नारी प्रकृति के विधान से नहीं, समाज के विधान से भोग्य है। प्रकृति में और समाज में भी स्त्री तथा पुरुष अन्योन्याश्रय हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यशपाल कृत "दिव्या" उपन्यास में ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में वर्तमान नारी-विमर्श की ही पड़ताल करने की कोशिश की गई है। प्रस्तुत प्रसंग में नारी के बारे में मारिश के प्रगतिशील विचार प्रस्तुत किए गए हैं।

मारिश के अनुसार नारी की अधीनस्थ स्थिति पुरुष की नियंत्रण भावना और अधिकार-सुख के अनुसार ही है। वस्तुतः तो प्रकृति और समाज में नारी और पुरुष दोनों का बराबर का स्थान है और दोनों अन्योन्याश्रय से ही सृष्टि में प्रवृत्त होते हैं। पर पुरुष ने अपने सुख के लिए ही नारी को अधीनस्थ और भोग्या की स्थिति प्रदत्त कर रखी है।

भाषा - तत्सम

शैली - विचारप्रधान

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

विशेष - उपन्यास में प्रद्युम्न, रुद्धीर, मालिश व अन्य पात्रों के माध्यम से नारी के प्रति विविध विचारों को रखने वाले पात्रों की सृष्टि की गई है।

—— X ——

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अहंकारमूलक आत्मवाद का खण्डन करके गौतम ने विश्वात्मवाद को नष्ट नहीं किया। यदि वैसा करते तो इतनी करुणा की क्या आवश्यकता थी? उपनिषदों के नेति-नेति से ही गौतम का अनात्मवाद पूर्ण है। यह प्राचीन महर्षियों का कथित सिद्धांत, मध्यमा प्रतिपदा के नाम से, संसार में प्रचारित हुआ। व्यक्तिरूप में आत्मा के सदृश कुछ नहीं है। वह एक सुधार था, उसके लिये रक्तपात क्यों?

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रसाद-साहित्य में बौद्ध-ब्राह्मण संघर्ष की ऐतिहासिक घटना को स्थानस्थान पर चित्रित किया गया है। स्कन्दगुप्त नाटक में बौद्धों और ब्राह्मणों के मध्य संघर्ष से उपजे वातावरण में मातृगुप्त और धातुसेन जैसे विचारक भी संवाद करते हैं।

धातुसेन का मानना है कि सनातन परंपरा और बौद्धों के विचार में मूलभूत विरोध नहीं है और सामंजस्य संभव है। उपनिषदों के नेति-नेति और विश्वात्मवाद को आधार बनाकर ही गौतम बुद्ध ने अनात्मवाद और मध्यमा प्रतिपदा का सिद्धांत समझा।

ऐसे में इस संघर्ष को सामंजस्य से

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

माध्यम से सुलझाने की बजाय संघर्ष की ओर ले जाना ठीक नहीं।

भाषा - तत्सम

शैली - विचारप्रधान, तर्कपूर्ण

विशेष - वर्तमान में सांप्रदायिक संघर्षों के मध्य भी इस विचार की प्रधानता आवश्यक है।

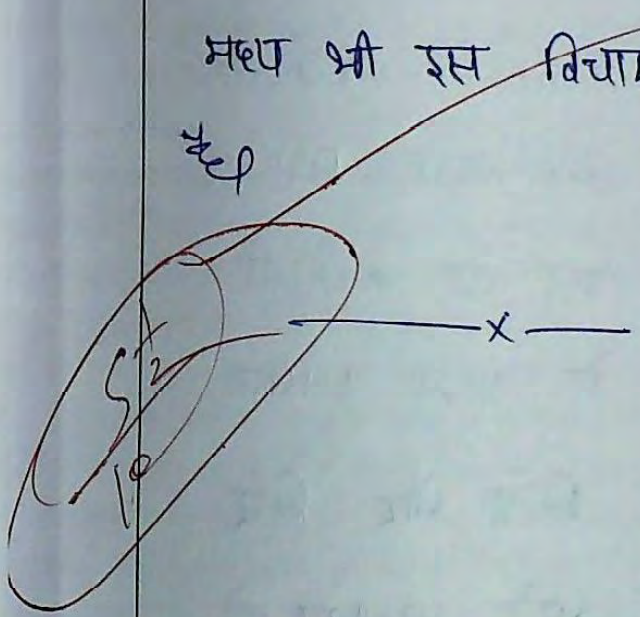

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) आज तक के वे भीतरी उबाल और बाहरी दबाव के बीच टुकड़े-टुकड़े होकर हमेशा घुटने ही टेकते आये हैं। हर बार दिनेश को लड़ाई के मैदान में ले तो ज़रूर गए हैं, पर जैसे ही गोलियाँ चली हैं, उसे वहीं छोड़कर भाग आये हैं- अकेला, निहत्था। वह गोलियों की बौछार से लहूलुहान होता रहा है और ये खुद एक असह्य अपराध बोध से। नहीं, और नहीं; अब तो वे चाहें तो भी शायद ऐसा नहीं कर सकते।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

मन्नू भण्डारी कृत 'महाभोज' में सक्सेना के चरित्र के माध्यम से लेखिका ने 'मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी' के अंतःसंघर्ष का चित्रण किया है।

सक्सेना विद्यार्थी जीवन में संघर्ष से पीछे हट गया था और वह तथ्य, विशेषकर दिनेश की मृत्यु उसके मन को कचोटती रहती है। इस अंतःसंघर्ष में आज सक्सेना ने निश्चित किया है कि बिन्दा और बिसू के साथ खड़ा होकर वह अपने पश्चाताप को भी संभव करेंगे और सत्य के पक्ष में खड़े रहेंगे। बुद्धिजीवी का इसी माध्यम से

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

अपने अंत:संघर्ष से मुक्ति मिल सकती है।

भाषा - सरल सहज

शैली - चिंतनप्रधान

<u>विशेष</u> - मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का यह अंत:संघर्ष मुक्तिबोध की कविताओं में और भी गहन होकर सामने आया है।

—— x ——

5½

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) पंडित ने रस्सी निकाली। उसका फंदा बनाकर मुरदे के पैर में डाला और फंदे को खींचकर कस दिया। अभी कुछ-कुछ धुँधला-सा था। पंडित जी ने रस्सी पकड़कर लाश को घसीटना शुरू किया और गाँव के बाहर घसीट ले गए। वहाँ से आकर तुरंत स्नान किया, दुर्गापाठ पढ़ा और घर में गंगाजल छिड़का।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'सद्गति' में प्रेमचंद ने जाति-व्यवस्था के अमानवीय पक्ष का भावपूर्ण वर्णन किया है। प्रस्तुत प्रसंग में दुखी की मृत्यु के बाद विवश होकर पण्डित स्वयं रस्सी में बाँधकर दुखी को सुबह के धुंधलके में घसीटकर बाहर फेंक आते हैं।

ऐसी परिस्थिति में भी उनकी मानवीयता नहीं जागती और वे स्वयं को अपवित्र समझकर पहले स्नान, गंगाजल और दुर्गापाठ के माध्यम से पवित्र होने का ही प्रयास करते हैं।

भाषा - हिंदुस्तानी

शैली - भावप्रधान

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

विशेष- ① यह दृश्य वास्तव में जातिप्रथा द्वारा मानवता की लाश खींचने का रूपक है।

② इस संवेदना से प्रभावित होकर सत्यजित रे ने सद्गति पर एक फिल्म का निर्माण भी किया है, जिसमें इस प्रसंग की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation